पाठ – 16

चचा छक्कन ने केले खरीदे

– श्री इम्तियाज़ अली

मनुष्य अपनी भावनाओं, लालसाओं और इच्छाओं को छिपाने का हर संभव प्रयास करता है। परन्तु मौका आते ही उसका लालच किसी न किसी रूप में बाहर आ जाता है। प्रस्तुत हास्य कहानी में इम्तियाज अली नें चचा छक्कन के माध्यम से मनुष्य के इसी स्वभाव को चित्रित किया है। चचा छक्कन के केले खाने की लालच ने उन्हें तरह–तरह के बहाने बनाने के लिए मजबूर कर दिया। और उन्होंने पूरे परिवार के हिस्से के केले खा लिए।

एक बात मैं शुरू में ही कह दूँ। इस घटना का वर्णन करने में मेरी इच्छा यह हरगिज़ नहीं है कि इससे चचा छक्कन के स्वभाव के जिस अंग पर प्रकाश पड़ता है, उसके संबंध में आप कोई स्थायी राय निर्धारित कर लें। कई बार मैं खुद देख चुका हूँ कि शाम के वक्त चचा छक्कन बाज़ार से कचौरियाँ या गँड़ेरियाँ या चिलगोज़े और मूँगफलियाँ एक बड़े–से रूमाल में बाँधकर घर पर सबके लिए ले आते हैं। और फिर क्या बड़ा और क्या छोटा, सबमें बराबर–बराबर बाँटकर खाते–खिलाते रहे हैं। पर उस रोज़ अल्लाह जाने क्या बात हुई कि .....।

उस रोज़ तीसरे पहर के वक़्त इत्तफाक से चचा छक्कन और बिंदो के सिवाय कोई भी घर में मौजूद न था। मीर मुंशी साहब की पत्नी को बुखार था। चची दोपहर के खाने से निवृत्त होकर उनके यहाँ चली गई थीं। बिन्नों को घर छोड़े जा रही थीं कि चचा ने कहा – ''बीमार को देखने जा रही हो तो शाम से पहले भला क्या लौटना होगा ? बच्ची पीछे घबराएगी। साथ ले जाओ, वहाँ बच्चों में खेलकर बहली रहेगी।'' चची बड़बड़ाती हुईं बिन्नो को साथ ले गई, नौकर चची को मीर मुंशी साहब के घर तक पहुँचाने भर जा रहा था, मगर बिन्नो साथ कर दी गई तो बच्ची के लिए उसे भी वहाँ ठहरना पड़ा।

लल्लू के मदरसे का डी.ए.वी. स्कूल से क्रिकेट का मैच था। वह सुबह से उधर गया हुआ था। मोदे की राय में लल्लू अपनी टीम का सबसे अच्छा खिलाड़ी है। अपनी इस राय की बदौलत उसे अक्सर क्रिकेट मैचों का दर्शक बनने का मौका मिल जाता है। इसलिए साधारण नियमानुसार आज भी वह लल्लू की अरदली में था। दो बजे से सिनेमा का मैटिनी शो था। दद्दू चचा से इज़ाज़त लेकर तमाशा देखने जा रहा था। छुट्टन को पता लगा कि दद्दू तमाशे में जा रहा है तो ऐन वक्त पर वह मचल गया और साथ जाने की ज़िद करने लगा। चचा ने उसकी पढ़ाई–लिखाई के विषय में चची का हवाला दे–देकर एक छोटा किन्तु विचारपूर्ण भाषण देते हुए उसे भी अनुमति दे दी। बात असल यह है कि चची कहीं मिलने गई हों, तो बाकी लोगों को बाहर जाने के लिए इज़ाज़त लेना कठिन नहीं होता। ऐसे स्वर्ण अवसरों पर चचा पूर्ण एकांत पसंद करते हैं। जिन कार्यों की ओर बहुत समय से ध्यान देने का अवसर नहीं मिला होता, ऐसे समय चचा ढूँढ़–ढूँढ़कर उनकी ओर ध्यान देते हैं।

आज उनकी क्रियाशील बुद्धि ने चची की अनुपस्थिति में घर के तमाम पीतल के बरतन आँगन में जमा कर लिए थे । बिंदो को बाज़ार भेजकर दो पैसे की इमली मँगाई थी । आँगन में मोढ़ा डालकर बैठ गए थे । पाँव मोढ़े के ऊपर रखे हुए थे । हुक्के का नैचा मुँह से लगा हुआ था । व्यक्तिगत निगरानी में पीतल के बरतनों की सफाई की व्यवस्था हो रही थी ।

बिंदो ने कुछ कहे बिना इमली लोटे में भिगो दी । चचा ने अभिमान से संतोष का प्रदर्शन किया– ''कैसी बताई तरकीब ? ले, अब बावरचीखाने में जाकर बरतन माँजने की थोड़ी–सी राख ले आ । किस बरतन में लाएगा भला ?''

बिंदो अभी बावरचीखाने से राख ला भी न पाया था कि दरवाज़े पर एक फलवाले ने आवाज़ लगाई । कलकतिया केले बेचने आया था । उसकी आवाज़ सुनकर कुछ देर तक तो चचा खामोश बैठे हुक्का पीते रहे । कश अलबत्ता जल्दी–जल्दी लगा रहे थे । मालूम होता था, दिमाग में किसी किस्म की कशमकश ज़ारी है । जब आवाज़ से मालूम हुआ कि फलवाला वापस जा रहा है तो जैसे बेबस–से हो गए । बिंदो को आवाज़ दी– ''ज़रा जाकर देखियो तो, केले किस हिसाब से देता है ।''

बिंदो ने वापस आकर बताया– ''छह आने दर्जन ।''

''छह आने दर्जन, तो क्या मतलब हुआ, चौबीस पैसे के बारह । बारह दूनी चौबीस, यानी दो पैसे का एक; ऊँहूँ, महँगे हैं । जाकर कह, तीन के दो देता हो, तो दे जाए ।''

दो मिनट बाद बिंदो ने आकर बताया कि वह मान गया और कितने केले लेने हैं, पूछ रहा है । फलवाला आसानी से सहमत हो गया तो चचा की नीयत में खोट आ गई । ''यानी तीन पैसे के दो ? क्या ख्याल है मँहगे नहीं इस भाव पर ?''

बिंदो बोला – ''अब तो उससे भाव का फैसला हो गया ।''

''तो किसी अदालत का फैसला है कि इतने ही भाव पर केले लिए जाएँ ? हम तो तीन आने दर्जन लेंगे; देता है तो दे, नहीं देता है न दे । वह अपने घर खुश, हम अपने घर खुश ।''

बिंदो असमंजस की दशा में खड़ा रहा । चचा बोले, ''अब जाकर कह भी तो सही, मान जाएगा ।'' बिंदो जाने से कतरा रहा था । बोला, ''आप खुद कह दीजिए ।''

चचा ने जबाव में आँखें फाड़कर बिंदो को घूरा । वह बेचारा डर गया, मगर वहीं खड़ा रहा । चचा को उसका असमंजस में पड़ना किसी हद तक उचित मालूम हुआ । उसे तर्क का रास्ता समझाने लगे, ''तू जाकर यूँ कह, मियाँ ने तीन आने दर्जन ही कहे थे, मैंने आकर गलत भाव कह दिया । तीन आने दर्जन देने हों तो दे जा ।''

बिंदो दिल कड़ा करके चला गया । चचा जानते थे, भाव ठहराकर मुकर जाने पर केलेवाला शोर मचाएगा । बाहर निकलना युक्तिपूर्ण न मालूम होता था । दबे पाँव अंदर गए और कमरे की जो खिड़की ड्योढ़ी में खुलती थी उसका पट ज़रा-सा खोलकर बाहर झाँकने लगे । फलवाला गरम हो रहा था, ''आप ही ने तो भाव ठहराया और अब आप ही ज़बान से फिर गए । बहाना नौकर की भूल का, जैसे हम समझ नहीं सकते । या बेईमानी, तेरा ही आसरा !'' बिंदो गरीब चुप करके खड़ा था । फलवाला बकता-झकता, खोंचा उठा चलने लगा । बिंदो भी अंदर आने को मुड़ गया । वह दरवाज़े तक पहुँचने न पाया था कि फलवाला रुक गया । खोंचा उतारकर बोला - ''कितने लेने हैं ?''

बिंदो अंदर आया तो चचा मोढ़े पर जैसे किसी विचार में तल्लीन हुक्का पी रहे थे । चौंककर बोले-''मान गया ? हम कहते थे न, मान जाएगा । हम तो इन लोगों की नस-नस से वाकिफ हैं । तो कै केले लेने मुनासिब होंगे ?'' चचा ने उँगलियों के पोरों पर गिन-गिनकर हिसाब लगाया-हम आप, छुट्टन की माँ, लल्लू, दद्दू, बिन्नो और छुट्टन । गोया छह, छह दूनी क्या हुआ ? खुदा तेरा भला करे, बारह । यानी एक दर्जन । प्रत्येक आदमी को दो केले बहुत होंगे । फल से पेट तो भरा नहीं जाता । मुँह का स्वाद बदल जाता है । पर देखियो, दो-तीन गुच्छे अंदर लेकर आना, हम आप उसमें से अच्छे-अच्छे केले छाँट लेंगे ।

फलवाले ने शिकायत की सदा लगाते हुए केलों के गुच्छे अंदर भेज दिए । चचा ने केलों को दबा-दबाकर देखा, उनकी चित्तियों का अध्ययन किया और दर्जनभर अलग किए । केलेवाला बाकी केले लेकर बड़बड़ाता हुआ विदा हो गया । चचा ने बिंदो की ओर रुख किया - ''ले, इन्हें खाने की डलिया में हिफाज़त से रख दे । रात के खाने पर लाकर रखना । और जल्दी से आकर बरतन माँजने के लिए राख ला । बड़ा समय नष्ट हो गया इस सौदे में ।''

बिंदो केले अंदर रख आया और बावरचीखाने से राख लाकर बरतन माँजने लगा । ''यूँ ..... ज़रा ज़ोर से । हाँ, ताकि बरतन पर रगड़ पडे । इस तरह पीतल के बरतन साफ करने के लिए ज़रूरत इस बात की होती है कि इमली के प्रयोग से पहले बरतनों को एक बार खूब अच्छी तरह माँजकर साफ कर लिया जाए । ऐसे सब बरतनों की सफाई के लिए इमली निहायत लाज़वाब नुस्खा है । गिरह में बाँध रख । किसी रोज़ काम आएगा । और पीतल ही का क्या ज़िक्र ? धातु के सभी सामान इमली से दमक उठते हैं । अभी-अभी तू आप देखियो कि इन काले-काले बरतनों की सूरत क्या निकल आती है ? हाँ, और वह, मैंने कहा - केले एहतियात से रख दिए हैं न ?..... यूँ बस मँज गया । अब रगड़ उस पर इमली । इस तरह । देखा, मैल किस तरह कटता है, कैसी चमक आती जा रही है । यह इमली सचमुच बड़ी चीज़ है । मगर बिंदो मेरे भाई, ज़रा उठियो तो । उन केलों से जो दो हमारे हिस्से के हैं, हमें ला दीजियो । हम तो अभी ही खाए लेते हैं, बाकी लोग जब आएँगे, अपना-अपना हिस्सा खाते रहेंगे ।''

बिंदो ने उठकर दो केले ला दिए । चचा ने मोढ़े पर उकडूँ बैठे-बैठे पैंतरा बदला और केलों को थोड़ा-थोड़ा छीलना और मज़े से खाना शुरू किया । ''अच्छे हैं केले, बस यूँ ही ज़रा ज़ोर से हाथ, इस तरह । छुट्टन की अम्माँ देखेंगी तो समझेंगी, आज ही नए बरतन खरीद लिए हैं । और वह मैंने कहा, अब कै केले बाकी रह गए हैं ?

दस ? हूँ । खूब चीज़ है न इमली ? एक टके के खर्चे में कायापलट हो जाती है । मगर बिंदो, इन दस केलों का हिसाब बैठेगा किस तरह ? यानी हम शरीक न हों तब तो हर एक को दो–दो केले मिल जाएँगे । लेकिन हमारे साझे के बिना शायद दूसरों का जी खाने को न चाहे । क्यों ? छुट्टन की अम्मी तो हमारे बगैर नज़र उठाकर भी न देखना चाहेंगी । तूने खुद देखा होगा, कई बार ऐसा हो चुका है । और बच्चों में भी दूसरे हज़ार ऐब हों, पर इतनी खूबी ज़रूर है कि वे लालची और स्वार्थी नहीं हैं । सबने मिलकर शरीक होने के लिए हमसे अनुरोध शुरू किया तो बड़ी मुश्किल होगी । बराबर–बराबर बाँटने के लिए केले काटने ही पड़ेंगे और कलकतिया केले की बिसात भला क्या होती है ? काटने में सबकी मिट्टी पलीद होगी । मगर हम कहते हैं कि समझो प्रत्येक आदमी एक–एक का हिसाब रख दिया जाए तो ? दो–दो न सही एक–एक ही हो, मगर खाएँ तो सब हँसी–खुशी से, मिलजुलकर । ठीक है ना ? गोया छह रख छोड़ने ज़रूरी हैं। तो इस सूरत में कै केले ज़रूरत से ज्यादा हुए ? चार ना ? हूँ, तो मेरे ख्याल से वे चारों ज्यादा केले ले आना। बाकी के छह तो अपने ठीक हिसाब के मुताबिक बँट जाएँगे।''

बिंदो उठकर चार केले ले आया । चचा ने इत्मीनान से उन्हें बारी–बारी खाना शुरू कर दिया ।

''हाँ, तो तू भी कायल हुआ न इमली की करामात का ? असंख्य लाभों की चीज़ है । मगर क्या कीजिए, इस ज़माने में देश की चीज़ों की ओर कोई ध्यान नहीं देता । यही इमली अगर विलायत से डिब्बों में बंद होकर आती तो ज़नाब लोग इस पर टूट पड़ते । हर घर में इसका एक डिब्बा मौजूद रहता।''

''तो अब छह ही बाकी रह गए हैं ना ? कुछ नहीं, बस ठीक है। सबके हिस्से में एक–एक आ जाएगा। हमें हमारे हिस्से का मिल जाएगा, दूसरों को अपने–अपने हिस्से का। काट–छाँट का तो झगड़ा खतम हुआ। अपने–अपने हिस्से का केला लें और जो जी चाहे करें। जी चाहे आज खाएँ, आज जी न चाहे, कल खाएँ। और क्या, होना भी यूँ ही चाहिए । इच्छा के बिना कोई चीज़ खाई जाए तो शरीर का अंश नहीं बनने पाती, यानी अकारथ चली जाती है । कोई चीज़ आदमी खाए उसी वक्त, जब उसके खाने को जी चाहे । छुट्टन की अम्माँ की हमेशा यही कैफियत है । जी चाहे तो चीज़ खाती हैं, न चाहे तो कभी हाथ नहीं लगातीं । हमारा अपना भी यही हाल है । ये फुटकर चीज़ें खाने को कभी कभार ही जी चाहता है । होना भी ऐसा ही चाहिए । अब ये ही केले हैं, बीसियों मर्तबा दुकानों पर रखे देखे, कभी रुचि न हुई । आज जी चाहा तो खाने बैठ गए । अब फिर न जाने कब जी चाहे । हमारी तो कुछ ऐसी ही तबीयत है । न जाने शाम को जब तक सब आएँ, रुचि रहे या न रहे । निश्चय से क्या कहा जा सकता है ? दिल ही तो है । मुमकिन है उस वक्त केले के नाम से मन में घृणा हो । तो ऐसी सूरत में क्या किया जाए ? हम तो बाकी छह केलों में से अपने हिस्से का एक केला अभी खा लेते हैं । क्यों? और क्या ? अपनी–अपनी तबीयत, अपनी–अपनी भूख। जब जिसका जी चाहे, खाए । उसमें तकल्लुफ क्या? तकल्लुफ में तकलीफ ही तकलीफ है । ऐसे मामलों में तो बेतकल्लुफी ही अच्छी है।''

''तो ज़रा उठियो मेरे भाई ! बस, मेरे ही हिस्से का केला लाना । बाकी के सब वहीं अच्छी तरह रखे रहें ।''

बिंदो ने आज्ञा का पुनः पालन किया । चचा केला छीलकर खाने लगे ।

''देख, क्या सूरत निकल आई बरतनों की ? सुभान–अल्लाह । यह इमली का नुस्खा मिला ही ऐसा है । अब इन्हें देखकर कोई कह सकता है कि पुराने बरतन हैं ! बस, यह इमली की बात आगे न निकलने पाए । बच्चों से भी ज़िक्र न कीजियो, वरना निकल जाएगी बात । कब तक आएँगे बच्चे ? लल्लू का मैच तो शायद शाम से पहले खतम न हो । उसके खाने–पीने का इंतज़ाम टीमवालों ने कर दिया होगा । वरना, खाली पेट क्रिकेट किससे खेला जाता है ? कोई इंतज़ाम न होता तो वहीं खाना मँगवा सकता था । खूब तर माल उड़ाया होगा आज । मेवे–मिठाई से ठसाठस पेट भर लिया होगा । चलो, क्या हर्ज़ है, यह उमर खाने–पीने की है । और फिर घर के दूसरे लोग बढ़िया–बढ़िया चीज़ें खाएँ तो

वह बेचारा क्यों पीछे रहे ? दद्दू और छुट्टन तो टिकट के दाम के साथ खाने-पीने के लिए भी पैसे लेकर गए हैं । और क्या ? वहीं किसी दुकान पर मेवा-मिठाई उड़ा रहे होंगे । खुदा खैर करे, गरिष्ठ चीज़ें खा-खाकर कहीं बदहज़मी न कर जाए। साथ में कोई रोक-टोक करनेवाला नहीं है । तकलीफ होती है । बिन्नो तो माँ के साथ है । वह ख्याल रखेगी कि कहीं ज्यादा न खा जाए । मगर मैं कहता हूँ कि केले हमने आज बड़े बेमौके लिए । उस वक्त ख्याल ही नहीं आया कि आज तो वे सब बड़ी-बड़ी नियामतें उड़ा रहे होंगे । केलों को कौन पूछने लगा ? और तूने भी याद न दिलाया, वरना क्यों लेते इतने बहुत-से केले ? बेकार नष्ट हो जाएँगे । पर अब खरीद जो लिए। किसी-न-किसी तरह ठिकाने तो लगाने ही पड़ेंगे । फेंके तो नहीं जा सकते । फिर ले आ यहीं। मज़बूरी में मैं ही खतम कर डालूँ ।''

शब्दार्थः– **हरगिज**–कदापि, **चिलगोजे** – एक प्रकार का फल, जो बदाम जैसा होता है, **इत्तफाक** – संयोग, **निवृत्त** – विरक्त, **अरदली**– नौकर, **मोढा** – माचा, बेत का बना आसन, **बावरचीखाने** – रसोई घर, **अलबत्ता** – निस्संदेह, **कश्मकश** – असमंजस, **वाकिफ** – जानना, **गोया** – जैसे, मानों, **निहायत** – बहुत अधिक, **गिरह** – गाँठ, **पलीद** – बिगाड़ना, **कैफियत** –वर्णन, **मुमकिन** – संभव, **तकल्लुक** – शिष्टाचार, **गरिष्ठ** – खाद्य पदार्थ जो देर से पचता है, **नियामतें** – ईश्वर प्रदत्त वैभव।

अभ्यास

पाठ से

1. बिंदो कौन है? चचा छक्कन ने उससे कौन–कौन से कार्य करवाए?
2. चचा छक्कन घर पर अकेले क्यों रह गए थे ?
3. इमली का प्रयोग चचा ने किस कार्य के लिए किया?
4. फलवाले ने 'या बेईमानी, तेरा ही आसरा' क्यों कहां?
5. क्रिकेट देखने का मौका किसे मिलता था और क्यों?
6. चचा छक्कन ने एक दर्जन केले खाते वक्त कौन–कौन से बहाने बनाए?
7. चचा छक्कन ने डिब्बा बंद समान के बारे में क्या कहा ?
8. देशी चीजों और विदेशी चीजों के विषय में चचा के क्या ख्याल हैं?

पाठ से आगे

1. घर के अभिभावक बच्चों को फुसलाने के लिए कई तरह के बहाने बनाते है। अपने साथियों के सहयोग से उन बहानों को सूचीबद्ध कीजिए।
2. फल वाले ने दोबारा दाम कम करके फल क्यों बेच दिया? अपने विचार लिखिए।
3. बच्चे जब घर लौटकर आए होंगे तब बिंदो ने केले खरीदे जाने की घटना को बताया होगा। बच्चों की क्या प्रतिक्रिया हुई होगी? चचा छक्कन ने क्या जबाव दिया होगा? साथियों से चर्चा करके लिखिए।

4. चचा छक्कन ने एक बार केले के दाम ठहरा लिए लेकिन बाद में बदल गए। उनका इस तरह का व्यवहार उचित था या अनुचित? कारण देते हुए अपना उत्तर लिखिए।
5. लेखक ने तकल्लुफ में तकलीफ–ही–तकलीफ बताई है। आप लेखक के इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं?
6. 'इच्छा के बिना कोई चीज खाई जाए तो शरीर को उसका लाभ नहीं मिलता आप इस बात से कहाँ तक सहमत/असहमत हैं? तर्क द्वारा स्पष्ट करें।
7. आजकल लोगों में देशी वस्तुओं की अपेक्षा विदेशी वस्तुओं के प्रति ज्यादा रुझान देखा जा रहा है। ऐसी प्रवृति कहाँ तक उचित है? इससे देश को होने वाले फायदे–नुकसान पर अपना तर्क दें।
8. अक्सर तीज–त्यौहार जैसे अवसरों पर घरों में तरह–तरह के पकवान आदि भोज्य पदार्थ बनते हैं, जो गरिष्ठ होते हैं। उन्हें खाकर बदहजमी हो जाती है। आपके साथ भी ऐसा हुआ होगा। अपना ऐसा ही कोई अनुभव लिखिए।

भाषा से

1. वाक्य संरचना को समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए –

- बिंदो उठकर चार केले ले आया।
- जी चाहे आज खाएँ, आज जी न चाहे, कल खाएँ।
- बिंदो केले अंदर रख आया और बावरचीखाने से राख लाकर बरतन माजने लगा।

पहले वाक्य में एक क्रिया अथवा एक ही विधेय है। उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं। दूसरे वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य है और एक आश्रित या सहायक उपवाक्य है। यह संपूर्ण वाक्य एक मिश्र वाक्य है। तीसरे वाक्य में दो वाक्य हैं जो 'और' शब्द से जुड़े हैं तथा दोनों स्वतंत्र वाक्य हैं। इसे संयुक्त वाक्य कहते हैं, पाठ से इस प्रकार के दो–दो वाक्यों को चुनकर लिखिए।

2. मदरसा, तरकीब, आसरा, हिफ़ाज़त जैसे विदेशज् शब्द (वे शब्द जो विदेशी भाषाओं से आकर हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने लगे हैं) के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए?
3. अल्प विराम (,) - लिखते समय जहाँ थोड़ी देर रूकना पड़ता है। वहाँ प्रयोग किया जाता है।
   पूर्ण विराम (।) – लिखते समय जहाँ ज्यादा देर के लिए रुकना होता है। वहाँ प्रयोग किया जाता है।
   प्रश्न वाचक (?)– अगर लिखित स्वरुप में प्रश्न पूछा जाए तो वहाँ प्रयुक्त होता है। अब आप इन तीनों के उदाहरण पाठ में खोजिए।
4. **निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर विदेशी शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाएँ–**

   क. <u>औपचारिकता</u> दिखाने की जरूरत नहीं, इसे अपना घर समझिए।

ख. एक मामूली बात पर दोनों भाइयों में बहुत देर तक खींचातानी होती रही।
ग. हमारा छोटा भाई इतना बातूनी है कि जरा देर चुप नहीं बैठ सकता।
घ. आज तो आप मुझे संयोग से यहाँ मिल गए।
ङ. मैंने तो आपकी अनुपस्थिति में आराम से बैठकर खाना खाया।
च. अपने शरीर की स्वयं सुरक्षा करनी चाहिए।

5. **निम्नलिखित शब्दों का इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए जिससे उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाए–**
नियत/नीयत, लोटा/लौटा, चित्त/चिति

6. क. **निम्नलिखित शब्दों और मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**
ठिकाने लगाना, हवाला देना, नीयत में खोट आना, नस–नस से वाकिफ होना, काया पलट होना, मिट्टी पलीत होना, अकारथ चली जाना, जबान से फिर जाना।

7. 'अभिमान' शब्द की रचना समझिए। 'मान' शब्द में 'अभि' उपसर्ग जोड़कर यह शब्द बना है।
ख. आप भी 'अभि' उपसर्ग जोड़कर दो शब्द बनाइए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
ग. ऐसे दो शब्द लिखिए जिनमें 'अनु' उपसर्ग लगा हो।

8. भूतकाल की चार क्रियाओं में वाक्य–रचना कीजिए जिनमें कर्ता के साथ 'ने' विभक्ति चिन्ह का प्रयोग हुआ हो।

योग्यता विस्तार

1. हिन्दी साहित्य में विभिन्न विधाएँ है जैसे कहानी, कविता, निबंध, एकांकी इत्यादि। ऐसी ही एक विधा है 'व्यंग्य'। आप अपने शिक्षक के सहयोग से व्यंग्य रचनाओं को पढ़िए।
2. चचा छक्कन की अन्य कारगुजारियों के संबंध में लेखक ने कई अन्य मनोरंजक विवरण लिखे हैं। शिक्षक की मदद से उन्हें खोजकर पढ़िए।
3. इमली किन–किन कामों में उपयोग आती है। जानकारी प्राप्त कीजिए।
4. उन विदेशी वस्तुओं की सूची बनाएँ जो इन दिनों बहुतायत में घरों अथवा लोगों के पास देखी जा सकती है।

458AW6